विभिन्न धर्म व मनुष्य

डॉ. वन्दना गर्ग*

धर्म मनुष्य जीवन का आवश्यक अंग है धर्म से मनुष्य ऐहिक और आरम्भिक सुख के लिए सहज सरल और अनुकरणीय उपाय बताता है। आज के भागम-भाग जिन्दगी में मनुष्य धर्म की उपयोगिता को भूल रहा है। वह काम और अर्थ के पीछे दौड़ रहा है। और धर्म जैसी कल्याणकारी वस्तु की उपेक्षा करता है जो लोग धर्म की विविध संस्थाओं से सम्बन्ध रखते हैं वे अपने स्वार्थ की दृष्टि से धर्म को अपना धन्धा बनाकर अपनी कामनाओं की पूर्ति का एक साधन बना लेते हैं।

धर्म का सर्वाधिक आन्तरिक तत्व ईश्वर की खोज और ईश्वर की सिद्धि है। धार्मिक नेताओं ने धर्म को वह मार्ग माना है जिस पर चलकर आत्मा अपने निज भण्डार अर्थात् परमात्मा तक पहुँचती है। धर्म आत्मा को परमात्मा से मिलाने का साधन हैं।

धर्म की उत्पत्ति मानव कल्याण के लिए हुई है। विश्व में जितने भी धर्म प्रचलित है यथा, हिन्दू धर्म जैन धर्म, इस्लाम धर्म, ईसाई धर्म सन्तृमत आदि। इन सब धर्मो के एकमात्र उद्देश्य मानव को दुख से निवृति करवाना है धर्म वह साधन बतलाता है जिसे अपनाकर हम सांसारिक दुखों से मुक्ति प्राप्त कर सकते है। धर्म का उद्देश्य है विशयों की असारता का दिग्दर्शन कराके जीवन में भय नियम एवं सयंम का महत्व अनुभूत कराना, मानव को आत्मज्ञान प्रदान करना तथा सच्चिदानन्द को प्राप्त कर परमानन्द की अनुभूति कराना।

धर्म के मध्य मरने में मनुष्य लौकिक दृष्टि और पारलौकिक दृष्टि से लाभ प्राप्त करता है। यदि इस लोक में मनुष्य बुरा जीवन व्यतीत करता है तो उसका परलोक भी सुन्दर नहीं हो सकता। धर्म के द्वारा मनुष्य में ज्ञान की उत्पत्ति होती है। उसे कर्तव्य का ज्ञान, सत्य असत्य का ज्ञान तथा त्यागने और ग्रहण करने के योग्य वस्तु का ज्ञान होता है। धर्म के माध्यम से मनुष्य, मानव मूल्यों यथा प्रेम, सेवा, सहयोग, सहानुभूति, परोपकार, करूणा, अहिंसा आदि का ज्ञान प्राप्त करता है और स्वयं में नैतिकता का विकास करता है। इस प्रकार धर्म की लौकिक उपयोगिता को देखते हुए सिद्ध होता है कि धर्म संसार में जीवन व्यतीत करने का एक अनुपम साधन है।

***हाउस नं. 959 गोकुलधाम सोसायटी गुड़गाँव हरियाणा**

पारलौकिक दृष्टि से नर-योनि को सफल बनाने के लिए धर्म मानव जीवन की सबसे बड़ी आवश्यकता है। धर्म मानव का सच्चा मित्र है। धर्म मानव समाज का रक्षक है धर्म परमात्मा का मानवता के लिए महानतम उपहार है। धर्म का अर्थ है आध्यात्मिक प्रकाश जो कि मानव हृदय को शुद्ध एवं प्रकाशित करता है। धर्म मनुष्य को यह अनुभव कराता है कि ईश्वर परमपिता है तथा मानव-मानव आपस में भाई भाई है। हम देखते है कि हिन्दू धर्म के स्वयं के चित्रण की युग-चेतना प्रधान है। हिन्दू धर्म का मूल स्त्रोत वेद है। इतिहास स्फरिक पुराण ग्रन्थ वेद, धर्म के व्याख्या रूप है। समाज के मनुष्यों ने ईश्वर की सर्वव्यापकता और कर्म का सिद्धान्त उनका आदर्श रहा है। सर्वथा ईश्वर को समर्पित होना और निस्वार्थ भाव से निरंतर कर्म करते रहना उनके जीवन का सिद्धान्त रहा है। शैव, वैष्णव और शाक्त धर्म हिन्दू धर्म के ही रूप हैं। साधारण शब्दों में कहा जाए तो शिव के उपासक शैव, विष्णु के उपासक वैष्णव और शक्ति के उपासक शाक्त कहे जाते हैं लेकिन भारत के हर प्रान्त में इनकी उपासना में कोई ऐसी संकीर्णता नहीं है कि इनमें से एक का उपासक किसी अन्य की उपासना न करता हो हम देखते है कि एक ही परिवार के व्यक्तियों के आराध्य देव भिन्न हो सकते है। वह सभी उत्सव मिल-जुल कर मनाते हैं। साथ ही अन्य देवी व देवताओं की उपासना और पूजा करते हैं गंगा, यमुना, सरस्वती, गोदावरी, बेतवा आदि नदियाँ हनुमान आदि शक्तियाँ, ग्राम देवता, स्थान देवता, कुल देवता, नगर देवता और इष्ट देवता आदि के रूप में अनेक शक्तियों की उपासना उनके साहित्य में देखी जा सकती है। वाराणसी, उज्जयनी इलाहाबाद जैसे ऐतिहासिक पवित्र नगर अपना ऐतिहासिक महत्त्व रखते हैं। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ तथा भारत के प्राचीन प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर भिन्न-भिन्न रूपों में उनके कथा साहित्य में आते है। वैष्णव धर्म हिन्दू धर्म के प्राचीनतम रूपों से निर्मोह तथा उसी धर्म को विकसित एवं परिवर्द्धित रूप है। यह धर्म बड़ा ही व्यापक और उदार है। सुगम भक्तिमयी इस धर्म की अपनी विशेषता है। वैष्णव धर्म के अनुसार प्रत्येक भ्रम चाहे वह किसी जाति व वर्ण का हो अपने इष्ट की अपार दया का अधिकारी होता है विष्णु का उपासना अनेक रूपों में इसके अनुयायियों के द्वारा की जाती है। भगवत ग्रन्थ इस धर्म का प्रधान पवित्र ग्रन्थ है। चौबीस अवतारों की मान्यता के साथ-साथ राम-कृष्ण की उपासना इसमें प्रत्येक प्रान्त में वैष्णव धर्म के उपासक पाये जाते हैं। शैव धर्म में शिव की आराधना प्रधान है। अन्य अनेक ग्रन्थों के साथ शिव पुराण इस उपासना का प्रधान ग्रंथ है। पार्वती कार्तिकेय, गणेश और नन्दी शिव

परिवार के प्रधान पात्र माने जाते हैं। विविध मांगलिक कार्यों तथा युद्ध के अवसरों पर इनकी भांति - भाँति से उपासना की जाती है। धीरे-धीरे शिव लिंग उस परम बह्म शिव का पर्याय बन गया। शिव के स्थान पर शिवलिंग की पूजा प्रतिष्ठित हो गयी शिव व शिवलिंग के अद्वैत की भावना ने ही लिंग को केवल स्थूल एवं सगुण तत्व की प्रतीक न रखकर परमशिव का पर्याय बना लिया। शाक्त धर्म के मूल में शक्ति की पूजा है शक्ति के उपासकों को शाक्त कहते हैं। शक्ति का सिद्धान्त भी उतना प्राचीन है जितना वैदिक धर्म। भारत में शक्ति की उपासना और भोग परम्परा प्रारम्भ से ही प्रचलित थी। वेदों में भी अनन्त आधार शक्ति की स्तुति के सूक्त मिलते हैं अथर्ववेद में 'देवी सूक्त' एवं श्री सूक्त में महाशक्ति का उल्लेख मिलता है। पौराणिक काल में हमें इस शक्ति की देवी का रूप बदला हुआ दिखाई देता है। देवी भागवत, देवी पुराण, मार्कण्डेय पुराण अदि में महाशक्ति की अनन्य महिमा गाई है। पुराणों में शाक्त देव पत्नियों के रूप में भी वर्णित है एवं उनके नाम ब्रह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, नरसिंह एवं रूद्राणी है। तान्त्रिक ग्रंथों में शक्ति के इस सुकुमार रूप ने भयानक रूप धारण किया और उसकी विकरालता, भयंकरता आदि प्रवृत्तियों के अनुरूप ही अनेक भयंकर रूपों की उपासना चल पड़ी और वह काली कराली, चंडी, महाकाली के रूप में सामने आई जो जगत की आद्य शक्ति है। जैन व बौद्ध धर्म भारत की प्राचीन काल की भ्रमण संस्कृति की देन है। जैन धर्म अत्यन्त प्राचीन कहा जाता है। इसके प्रवर्तक आचार्य तीर्थ कहे जाते हैं। ये संसार रूपी समुद्र को मनुष्यों को पार कराने के लिए धर्म रूपी घाट का पुल बनाने वाले कहे जाते है। जिस शब्द का अर्थ है - जिसने इन्द्रियों को जीता है। निरग्रन्थ का अर्थ है जिसकी ग्रन्थि अर्थात् बन्धन टूटे हुए है। बौद्ध धर्म भी जैन धर्म की तरह भारत की प्राचीन भ्रमण परम्परा में उत्पन्न हुआ। बुद्ध ने अति कठोर तप के मार्गो को छोड़कर बीच के मार्ग को अपनाया जो अष्टांग मार्ग कहलाता है इसके आठ अंग है - सम्यक दृष्टि सम्यक संकल्प, सम्यक वाक, सम्यक कर्म सम्यक आजीविका और सम्यक समाप्ति। विदेशी धर्मो में पारसी यहुदी, ईसाई और इस्लाम धर्म प्रमुख है जिनमें ईसाई और इस्लाम के अनुयायी भारत में पाये जाते हैं। भारतीय संस्कृति में भारतीय धर्मो के साथ-साथ ईसाई और इस्लाम के प्रभाव और उपासकों के प्रसंग मिल जाते हैं। क्योंकि मुगलों और अंग्रेजों के शासन के कारण में दोनों ही धर्म भारत में फूले फले हैं। राजनीतिक से जुड़े होने के कारण इन दोनों धर्मो का प्रचार प्रसार भारत में बहुत हुआ। क्योंकि दोनों धर्म मनुष्य के कल्याण का पुरजोर समर्थन करते थे

इसलिए उस काल विशेष में इन धर्मो के लोगों ने अपनाया तथा अपने जीवन में सम्यक व मध्यम मार्ग को अपना कर जीवन को ज्यादा उन्नत करने का प्रयास किया गया। भारतीय संस्कृति धार्मिक सहिष्णुता की ओर उन्मुख है इसलिए हम कह सकते है धर्म चाहे कोई भी क्यों न हो वह मनुष्य से परोक्ष रूप से न केवल जुड़ा वह उसके जीवन का अभिन्न हिस्सा भी है।

सन्दर्भः-

१. बौद्ध धर्म दर्शन, साहित्य तथा संप्रदाय

२. कौन है ये यीशु

३. विणु महापुराण

******